International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 411-412

निराला के साहित्य में सांस्कृतिक व सामाजिक चेतना

डॉ0 नीतू शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर, आई0 टी0 कॉलेज, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

निराला के साहित्य में मानव, क्रान्ति, स्वाधीनता, सवर्ण, राष्ट्र, समाज, जातीय व्यवस्था, छुआछूत, नारी स्वाधीनता तथा समाज और साहित्य में व्याप्त पाखण्ड जैसे चिन्तन के अनेक बिन्दु है। निराला जब किसी अति मानव की कल्पना करते है उनके सामने सदा ही यह दृष्टिकोण रहता है कि वह मानव की संवेदनाओं के साथ कितना जुड़ा हुआ है। सामान्य मानव से उनका तात्पर्य सुविधा नही सम–साधना से जीवन जीने वाले मानव से है। स्व जन्मा–स्वतः स्फूर्त मानव से है। अस्तु मानव वही है जिसमें मानव मात्र के प्रति सहज संवेदना हो।

निराला का मानव–प्रेम शुद्ध मानवतावाद पर आधारित है, इसलिए उनकी दृष्टि में जितने आदरणीय राम, कृष्ण, भीष्म, शिवाजी, गुरूगोविन्द सिंह जैसे असाधारण मानव रह है उतने ही 'भिक्षुक', कृश काय, जीर्ण–शीर्ण मानव भी। उनकी 'पत्थर तोड़ती' फूटी गगरी वाली मुसलमान बालिका, तथा देवी कहानी की 'भिखारिन' उनकी संवेदना की समान अधिकारिणी है। निराला जी मानव को मानव के धरातल पर ही प्रतिष्ठित रखना चाहते है।

आज भी समाज में पिछड़ी और दलित जातियों के बीच खाई खिची हुई है। निराला जी जातीय व्यवस्था को जातीय व्यवस्था से जोड़ते है वे इसे सामग्री व्यवस्था की देन मानते है। चतुरी चमार, बिल्लेसुर, बकरिहा और कुल्ली भाट उनके काल्पनिक पात्र नही है इन सब का निराला के जीवन से सीध सम्बन्ध है। यद्यपि काव्य में इन जातीय विसंगतियों को बहुत अधिक खोलकर नही दिखाया गया है तो भी 'सेवा प्रारम्भ' स्वामी प्रेमानन्द जी महाराज, भिक्षुक' आदि में इसको स्पष्ट संकेत अवश्य है। 'अणिमा के एक प्रसद्धि गीत 'दलित जन पर करो करूणा' को किसी राजनैतिक आग्रहवश जाति विशेष के लिए गीत नही समझना चाहिए। अपितु यह समस्त दुखी मानवता के लिए निराला जी का गीत है। 'कुकुरमुत्ता' जातीय पिछड़ेपन, सामाजिक प्रतिष्ठाहीन स्वतः स्फूर्त श्रमशील किन्तु दरिद्र मानव का प्रतीक है। उसका बड़बोला पन मात्र आत्म प्रशंसा नही है, यह उपेक्षित मानव की प्रकट हुई कुण्ठा भी हैं। निराला जी समाज में व्याप्त जाति भेद को देख तो रहे थेख इससे भीतर तक पीड़ित भी हो रहे थे। निराला ने 'निरूपमा' उपन्यास के नायक कृष्ण कुमतार (जो उच्चकुलीन कान्यकुन्ज ब्राहमण इण्लैण्ड से अंग्रेजी में डी0 लिट0 तथा स्वयं निराला जी का प्रतिरूप है को बीच सड़क पर बूट पॉलिस करते दिखाया है और उसकी देहाती संस्कार मे पली–पढ़ी माँ इससे लज्जित नहीं है। इस चरित्र के द्वारा निराला जी द्विज और अन्त्यजों के बीच की खाई को पूरी तरह से पाट देना चाहते है।

नारी अस्मिता के इस दौर में निराला ने नारी में छिपी हुई ऊर्जा को पहचाना था। वे नारी का शोषित स्थिति को देखकर चिन्तित थे कि नारी न तो अपने कर्तव्यों के प्रति सचेष्ट है और न स्वतंत्र। उन्होंने लिखा – ''प्राचीन शीर्णता ने नवीन भारत की शक्ति को मृत्यु की ही तरह घेर रखा था। घर की छोटी–सी सीमा में बँधी हुई स्त्रियॉ आज अपने अधिकार, अपना गौरव, देश तथा समाज के प्रति अपना कर्तव्य सब कुछ भूली हुई है।'' निराला जी का स्पष्ट विचार था कि सामाजिक रूढ़ियॉ जैसे अन्त्यजों को दास बनाए हुए है वैसे नारियों को भी। वे भी ये मानते थे कि गुलाम मानिसिकता के लोग अपनी स्त्रियों को भी दासता से जकड़े हुए हैं उन्हें इनसे मुक्त करना ही होगा। वे इस विचारधारा के समर्थक नही थे कि प्रकृति ने स्त्री–पुरूष के कार्यक्षत्रों को अलग कर रखा है। अपितु उनका विचार थ कि जो कठोर श्रम पुरूष कर सकता है वह नारी भी। 'वह तोड़ती पत्थर' कविता इसका प्रमाण है। निराला जी नारी की पराधीनता का एक विशेष कारण उसकी आर्थिक पराधीनता को मानते है। उन्होंने नारी के मुत्री, पत्नी माँ, प्रेयसी जगति–जननी, बहन जैसे अनेक रूपों का वर्णन किया है। प्रायः वे सभी रूपो के प्रति परम निष्ठावान भी रहे हैं वे काम या वासना को त्याज्य नही मानते, किन्तु वे उसके मर्यादित रूप के ही पक्षपाती है और उसकी मर्यादित सिद्धि नारी के बिना संभव नही है। उनके सामने भारत की 'दलित विधवा' और गर्मी की दुपहरी में 'पत्थर तोड़ती नारी का आदर्श रहा है। निराला के साहित्य में नारी सदा ही शक्ति स्वरूपा रही है अबला नही हैं। उसकी शक्ति कभी धारा बनकर जीर्ण–जीर्ण परम्पराओं के दम्भ को तोड़ती है कभी हाड़ चाम के मोह को भस्म करती है। अस्तु निरालाजी का नारी चिन्तन पर्याप्त व्यापक, विविध एवं संतुलित है वे कल्पना लोक में केवल विचरण नही करते अपितु उनका नारी चिंतन यथार्थ की कंटकाकीर्ण धरती पर टिका हुआ है। निराला परीधीनता को सबसे बड़ा सामाजिक और मानवीय अपराध मानते है क्योंकि पराधीन राष्ट्र की भाषा, विचारधारा और संस्कृति का क्षय तो होता ही है, भविष्य के लिए गौरव के स्थान पर निंदा के पात्र बनते है। निराला के साहित्य में दो राष्ट्रीय पराधीनताओं का चित्रण है। पहला मुसलमानो से दूसरा अंग्रेजो से। वे मुस्लिम और अंग्रेजी साम्राज्यवाद के षडयंत्र को भली प्रकार समझते है उनकी धारा, आवाहन, जागो फिर एक बार, शिवाजी महाराज का पत्र, दिल्ली, खण्डहर तुलसी दास और राम की शक्ति पूजा जैसी रचनाएं राष्ट्र को नवीन शक्ति से मंडित कर नई स्फूर्ति, नई ऊर्जा और नई सांस्कृतिक चंतना के प्रस्फूटन का माध्यम है। 'जागों फिर एक बार' तथा शिवाजी महाराज का पत्र राष्ट्रीय भावनाओं का तेजस्वी विस्फोट है। उनकी 'भरति जय विजय करे' कविता में सरस्वती को ही भारत माता के रूप में चित्रित किया गया है। अस्तु निराला जी की राष्ट्रीयता न केवल पराधीनता की विरोधी है स्वशासन की समर्थक बल्कि उनकी राष्ट्रीय स्वाधीनता का स्पष्ट एक सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक आधार भी है।

निराला हिन्दी के प्रति सदैव चिंतित रहे है। उनकी हिन्दी चिंता में भाषा साहित्य तथा मीडिया के विभिन्न रूपों में उनका समन्वित दृष्टिकोण उभर कर आता है। निराला इस बात को भली प्रकार जानते थे कि किसी देश की राष्ट्रीयता को विकास में उस देश की

भाषा बहुत बड़ा योगदान रहता है। हमारे देश की राष्ट्रीयता के विकास में हिन्दी भाषी लोगों ने कभी भी विभिन्न अहिन्दी भाषी प्रदेशो को अपना दास बनाने के लिए उनसे युद्ध नही किया बल्कि उनकी संधियों का मूलाधार सांस्कृतिक है। हिन्दी क्षेत्र की समस्त बोलियों (ब्रज, अवधी आदि) के साहित्य को लक्ष्य करते हुए उत्तर से दक्षिण तथा पूरब से पश्चिम तक के उनके प्रसार को अपना आधार बनाया। उन्होंने इन बोलियों के साहित्य की महत्ता को स्थापित किया। उस समय देश में अंग्रेजी के विरूद्ध एक वातावरण तैयार हो रहा था। आचार्य द्विवेदी जी ने लिखा–''मद्रास प्रान्त में कई करोड़ आदमी तमिल और तैलंगी भाषाएं बोलते है। वह उनकी मातृ भाषाएं है। उनक सबकों कुछ थोड़ी सी प्रारम्भिक शिक्षा छोड़कर अन्य सारी शिक्षा अंग्रेजी भाषा ही द्वारा मिलती है। यह बात आश्चर्य में डालने वाली है ..... अंग्रेजी भाषा सीखने की आवश्यकता है जरूर, तथापि इससे मातृ भाषा में शिक्षा प्राप्त करने का महत्ता कम नही हो सकती। निराला जी ने द्विवेदी जी का अनुसरण किया। किन्तु केवल भाषाओं के आधार प्रान्त बद्धता को वे उचित नहीं मानते थे। वे ये तो स्वीकार करते थे कि प्रत्येक भाषा में उत्कृष्ट साहित्य की रचना हो किन्तु ''साहित्यिक उत्कर्ष के साथ ही भावों के सार्वदेशिक सुगम विनिमय का ध्यान भी रखना पड़ेगा और यही राष्ट्रीय भाषा का प्रश्न है।'' राष्ट्रीय भाषा के प्रश्न पर रवीन्द्र नाथ, गाँधी और जवाहर लाल तक का विरोध करने में वे हिचकिचाए नहीं।

निराला का अधिकांश राष्ट्रीय, सामाजिक, जातीय नारी तथा भाषागत चिन्तन उनकी गद्य रचनाओं एवं सम्पादकीय टिप्पणियों में अधिक प्रकाशित हुआ है। इसलिए उनके साहित्य में शब्दों के प्रयोग के कुछ नये आयामों का परिचय प्राप्त होता है।

निराला के चिंतन में राष्ट्र, समाज की रूढ़ियों, जातिप्रथा, हिन्दी भाषा, क्रान्ति तथा नारी स्वाधीनता जैसे विविध आयाम दिखाई पड़ते है। उनके सामने पूरा राष्ट्रीय आन्दोलन घाटित हुआ। छुआछूत तथा जाति भेद समाज में कितनी विषमता बिखेर रहा है। नारी अशिक्षा और आत्मनिर्भरता के अभाव में कितनी पराधीन है। हिन्दी को कैसे राष्ट्रभाषा पद पर प्रतिष्ठित किया जाए तथा क्रान्ति को इस प्रकार व्यावहारिक भूमिका पर लाते हुए उसे कैसे पूर्ण क्रान्ति का रूप दिया जाए आदि बातों का वे गहराई से अनुभव करते है। इसकी व्यावहारिकता को अपने जीवन में उतारते है। और काव्य में प्रस्तुत करते है। धारा, बादल राग, जागो फिर एक बार, महाराज शिवाजी का पत्र, तुलसी दास, राम की शक्ति पूजा, गीतिका, अर्णिमा, अर्चना के अनेक गीतो में इनके इन विचारों की झलक देखी जा सकती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. प्रबन्ध प्रतिमा।
2. अनामिका।
3. निराला की साहित्य साधना।
4. सुधा जुलाई – पृष्ठ 1930।
5. अर्णिमा।
6. गीतिका।
7. सुधा, जून 1930।
8. तुलसी दास – पु0 87,48?
9. सरस्वती – 1916।